मासिक पत्रिका जुलाई 2019

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	राजेन्द्र कुमार वर्मा	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

इदन्न मम

-डॉ. बिजेन्द्र पाल सिंह

साभार: आर्य जगत्- अक्टूबर 2018

हमारे ऋषियों द्वारा बनाया विधान विश्व में सर्वश्रेष्ठ है। मुख्य रूप से वैदिक वाग्मय में ईर्ष्या, लोभ, मोह आदि बन्धनों से दूर रहना ही जीवन है। संध्या अग्निहोत्र के मंत्रों में इदन्नमम शब्द बार-बार आता है, जैसा कि ओ३म् अग्नये स्वाहा **"इदमग्नये-इदन्नमम"**।

हे ज्ञान स्वरूप! हम ज्ञान प्राप्ति के लिए सम्यक्तया पूर्ण रूपेण अपना सर्वस्व ज्ञान स्वरूप यज्ञाग्नि में आहूत करते हैं। आपके द्वारा प्रदत्त ये समस्त पदार्थ ज्ञान प्राप्ति ही के लिए तो दिए गये हैं ये सब द्रव्य मेरे नहीं हैं। ऐसे ही

ओ३म् सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदन्नमम।

हे सौम्य रूप प्रभो, शांत और सौम्य स्वभाव बनने के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करते हैं। प्रभु ये सारे पदार्थ सोम बनने के लिए ही तो आपने हमें प्रदान किए हैं। ये सब पदार्थ मेरे नहीं हैं। मैं यज्ञ में इनका विनियोग करता हुआ सौम्य बनूँ।

यह सब मेरा नहीं है, मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से किसी फल की कामना नहीं। यह आहूति संसार के उपकार के लिए है। समस्त मंत्रों में ईश्वर से यही प्रार्थना की है कि यह आहूति मेरे स्वार्थ के लिए नहीं, मेरे लिए नहीं, अपितु संसार के उपकार के लिए है। यहाँ तक कि जो भी हम उपयोग में ला रहे हैं हमारा घर, धन, स्वर्ण आदि जो कुछ भी हैं, वह सभी ईश्वर का है, मेरा नहीं। ईशोपनिषद में भी ऐसा ही उपदेश है-

ईशावास्यमिदं सर्वंयत्किञ्च जगत्यांजगत्।
तेन त्येक्तेन भुञ्जीथा मागृधः कस्यस्विद्धनम्॥

-ईशोपनिषद्

अर्थात् संसार में जो भी गमनशील जगत् है अर्थात् जितने भी भौतिक पदार्थ हैं उन सब में ईश्वर व्याप्त है। अतः हे मनुष्य प्रारब्ध कर्मानुसार इन पदार्थों का भोग कर। यह धन किसका है, यह सब कुछ उस ईश्वर का है, मेरा कुछ भी नहीं।

आज मनुष्य लोभ व मोह के बन्धन में फँसा है, यही दुःख का कारण है। प्रमाद के साधन सुख देते हैं परंतु यह क्षणिक सुख हैं, सुख होते हुए भी यह दुख ही हैं। सत्यरूप में सुख तो परमात्मा के पास जाने में ही है, जिसे आनन्द कहते हैं।

मनुष्य के पास झोंपड़ी हो तो वह चाहता है कि घर बन जाय, घर हो तो चाहता है कोठी मिले, कोठी हो तो चाहता है, बंगला मिल जाए। उसके पश्चात् उसमें कार व वातानुकूलित साधन व सुंदर रूपवती नारी भी हो। वह मोह में बंधा हुआ आगे और भी प्रमाद के साधन माँगता ही जाता है। अंत में अत्यधिक धन बंगला व कार आदि को यहीं छोड़ जाता है। रिक्त हस्त दुनियाँ से चला जाता है। शरीर भी साथ नहीं जाता। अधिक रूग्ण होने पर ईश्वर से कहता है **"हे भगवान अब उठा ले"** क्या उठा ले! इस शरीर को! नहीं! शरीर में से आत्मा को उठा ले। शरीर तो भी नहीं जाता आत्मा निकल जाती है जीवन भर धनार्जन किया। दूसरों का दिल दुखाया, भ्रष्टाचार किया, पाप किया, झूठ बोला किसलिए? इसलिए कि मेरी आगे आने वाली पीढ़ियाँ बैठकर खाएँगी, आराम से रहेगी, मृत्यु के बाद वह धन किसी के काम नहीं आता। कितना भी पाप कर धन कमा लो, पाप का फल कर्म करने वाले को ही भोगना पड़ेगा। प्रयोग करने वालो को नहीं और फिर मृत्यु के पश्चात् तो आत्मा किसी और परिवार में पहुँच गयी। अब सम्बन्धी कोई और हो गये, पिछलों से तो कोई नाता न रहा फिर वह अथाह धन जोड़ा था किसका हुआ।

युधिष्ठिर चक्रवर्ती शासक थे। हस्तिनापुर राजधानी थी, सात अक्षौहिणी सेना वहाँ महल के नीचे से वाद्य व ढोल-नगाड़ों के साथ निकला करती थी। आज वहाँ भयानक जंगल हैं, बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं के महल खण्डहर मात्र रह गए।

सद्दाम हुसैन के वारिसों का अता पता नहीं। हिटलर, सिंकदर भी गए, सब यहीं छोड़ गए। बहादुर शाह ज़फर के वंशजों का बुरा हाल है, किसका धन किसके काम आया।

आज मनुष्य धन के पीछे भाग रहा है, धन साथ कभी नहीं देता सदैव याद रखो। यहाँ जो कुछ भी है वह सब यहीं रह जाता है। कुछ भी मेरा नहीं है, अत: मोह-ममता त्याग सदैव यही स्मरण करो यही, यह सब मेरा नहीं, सब ईश्वर का है, इदन्न मम की भावना होनी चाहिए। यदि ऐसी ईश्वरीय भावना हमारी हो तो कहीं कोई दुख नहीं होगा।

बृहदारण्यकोपनिषद् में वर्णन है-याज्ञवलक्य ऋषि जब संयासाश्रम हेतु वन गमन को जाने लगे तो मैत्रेयी को बुला कर कहा कि क्यों न इस धन, सम्पत्ति, भू-भाग को आप दोनों अर्थात् मैत्रेयी व कात्यायनी को दे दूँ जिससे दोनों का जीवन सुख पूर्वक व्यतीत हो सकेगा। इस पर मैत्रेयी ने कहा, ठीक है यदि यह धन सम्पदा से परिपूर्ण पृथ्वी पूरी मुझे दे दो तो क्या मैं अमर हो सकूँगी? इस पर ऋषि ने कहा, नहीं अमर तो न हो सकोगी परंतु सुखी रह सकोगी। इस पर मैत्रेयी बोली, महाराज मुझे वह दीजिए जिससे अमरता को प्राप्त हो सकूँ। फिर ऋषि बोले, वह आत्मज्ञान है जिसे पाकर व्यक्ति अमर हो सकता है। धन से कभी कोई अमर नहीं हुआ, धन तो केवल जीवन यापन का साधन है। मैत्रेयी ने कहा, फिर महाराज मुझे अमर होने हेतु वही आत्मज्ञान का उपदेश दीजिए।

कहने का तात्पर्य यह है कि जीवन में मोक्ष का, अमरता का साधन ज्ञान है, धर्म है, धर्माचरण है, धन नहीं। अत: मन में यही विचार करते रहना चाहिए कि इस दुनियाँ में जो कुछ भी है वह सब ईश्वर का है, मेरा कुछ नहीं अर्थात् इदन्नमम।

इदन्नमम की भावना से ईर्ष्या, लोभ, मोह जो सांसारिक बन्धन के कारण है, मानव की बेचैनी व दु:ख के कारण है, उनसे दूर होता चला जाता है और जैसे-जैसे इदन्नमम की भावना दृढ़ होती जाती है, ईश्वर के प्रति समीपता बढ़ती जाती है। आइए इदन्नमम की भावना बनाएँ और इस भव बन्धन से छुटकारा पाएँ, अमृत्व की ओर बढ़ें।

जब से संयुक्त परिवारों की प्रथा टूटी तब से परिवारों में जो वैदिक संस्कृति की भावना प्राचीन काल से चली आ रही थी समाप्त हो गयी। लोगों में आवश्यकता से अधिक धन एकत्र करने व प्रमाद के अधिकाधिक साधनों की इच्छा बढ़ गयी। भौतिकवाद बढ़ने व वेदों से दूर जाने से इदन्नमम के स्थान पर ऐसी अवैदिक भावना बढ़ी कि आदमी चाहने लगा कि यह भी मेरा, वह भी मेरा और सब कुछ मेरा हो। पहले भाई-भाई के लिए सिंहासन को ठुकरा देता था। राम ने वनवास ग्रहण किया, भरत ने सिंहासन को हाथ न लगाया परंतु महाभारत काल में सिंहासन के लिए युद्ध हुआ। दुर्योधन ने कहा बिना युद्ध के एक इंच स्थान भी न दूँगा। तब से आज तक कुर्सी की लड़ाई हो रही है। अश्वपति, भर्तृ हरि, याज्ञवल्क्य ऋषियों ने सन्यास आश्रम में जाते ही सिंहासन छोड़ दिया। राज-काज भी छोड़, राजसी वस्त्र व सुख वहीं छोड़, खड़ाऊँ पहन वन को चले गए। आज कौन है जो राज-पाट छोड़ सन्यासी बन जाए। चमड़ी चली जाय पर दमड़ी न जाय, गद्दी मिल जाए तो छोड़ना नहीं चाहते। चाहते हैं कुर्सी को भी स्वर्ग तक साथ ले जाएँ, यह है मोह-माया का बंधन क्योंकि वेद का ज्ञान रहा नहीं, वेद प्रवाह रुक गया, अवैदिक भावनाएँ बढ़ गयीं, लोभ-लालच-मोह बढ़ गया जो व्यक्ति परिवार समाज के लिए दुखदायक है।

आज इदन्नमम की भावना प्रत्येक हृदय में हो, आइए वेद व वेदादि शास्त्रों का स्वाध्याय करें। जीवन को उज्ज्वल बनायें। मन में, हृदय में यही भावना हो कि यह मेरा नहीं है, इसमें जो भी मैं कर रहा हूँ, यज्ञ कर रहा हूँ। संसार के उपकारार्थ कर रहा हूँ। समाज के हितार्थ कर रहा हूँ। सभी की इसमें भलाई है, मेरी भावना इदन्नमम की है और रहेगी। ■■

सद्विचार

- शिक्षा वही है जो जीवन का विकास करे।
- संसार में कुछ भी असंभव नहीं है।
- त्याग से ही सच्चा सुख मिलता है।
- परोपकार में सबसे आगे रहो।
- अच्छी सन्तान ही माता-पिता के लिए गौरव है।
- ईश्वर को सामने रखकर कर्म करो, फल की चिन्ता मत करो।
- मन पर विजय पाने वाला ही वास्तव में पुरुष है।

प्रेरक वचन

साभार: आर्य प्रतिनिधि, मई 2019 (द्वितीय)

- स्वयं को अत्यधिक ज्ञानी समझना असल में अज्ञानता की निशानी है।
- विनम्रता सभी सद्गुणों का आधार है।
- दुनिया को बदलने के लिए शिक्षा सबसे सशक्त माध्यम है।
- सफलता के लिए श्रम से बड़ा साधन कोई और नहीं।
- ईर्ष्या ऐसी आग है जो जीवन को भस्म कर देती है।
- क्रोध के बाद सिर्फ ग्लानि का अनुभव होता है।

जुलाई 2019 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
07	डॉ. उमा आर्य (9968962885)	'मैं' की जीवन में भूमिका
14	श्री नरेश सोलंकी (9717637632)	भजन
21	डॉ. धर्मेन्द्र शास्त्री (9999426474)	जीवन का नियम भोग नहीं त्याग है।
28	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	साधना और स्वाध्याय

जून मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
श्रीमती सतीश सहाय	1,20,000/-	श्री अशोक गीरा	2,000/-	श्री सुख सागर ढींगरा	1,100/-
ब्रि. जय गोपाल डंग	30,000/-	श्री आक्रश गीरा	2,000/-	श्री दीपक खन्ना	1,100/-
श्री रजत चण्डोक	25,000/-	श्री शिवांग गीरा	2,000/-	श्री एस.एल. आनन्द	1,100/-
श्री सुनील गुप्ता	10,000/-	श्री प्रणव गीरा	2,000/-	श्री अनन्त राम	1,000/-
श्री एस.सी. गुप्ता	5,000/-	श्रीमती सुषमा	2,000/-	श्रीमती सत्या ढींगरा	1,000/-
श्री आर.डी. थापर	5,000/-	श्री सुशील कुमार जॉली	2,000/-	ब्रिगेडियर अदलखा	1,000/-
श्री जगमोहन	5,000/-	श्री आर.के. तनेजा C/o तनेजा फाउण्डेशन	1,100/-	श्रीमती माया देवी	1,000/-
श्री रवि तनेजा- C/o तनेजा फाउण्डेशन	2,100/-	श्री अरुण वोहरा	1,100/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
डॉ. विनोद मलिक	2,100/-	श्रीमती दीपती शर्मा एवं श्री वी.के. शर्मा	1,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
श्री राजीव कुमार गीरा	2,000/-	श्री नरेन्द्र वाधवा	1,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्रीमती सुनीता गीरा	2,000/-	श्री सुनील बिसला	1,100/-	श्री के.के. कौल एवं परिवार	700/-
श्री अनिल गीरा	2,000/-	श्री अतुल मदान	1,100/-	श्री संजय गुप्ता	500/-
श्री नीरज गीरा	2,000/-	श्री विजय ढल	1,100/-	श्रीमती शशि भण्डारी	500/-
श्री दीपक गीरा	2,000/-			श्रीमती अदिता आनंद	500/-

पुरोहित द्वारा दान राशि : ❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम : ₹ 18,700/-

वैदिक सैन्टर के लिए प्राप्त दान राशि :

❖ श्रीमती वीना कश्यप ₹ 1,00,000/-
❖ श्रीमती राज कुमारी छाबड़ा ₹ 50,000/-
❖ श्री मनोहर लाल छाबड़ा ₹ 50,000/-
❖ श्रीमती रश्मि मित्तल ₹ 5,100/-

मनुस्मृति: दिनांक 26 जून 2019 को डॉ. अजीत कुमार ने 'मनुस्मृति पर चिन्तन' विषय पर अपने विचार रखे थे। ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में 540 बार 'मनुस्मृति' का प्रमाण रूप में उल्लेख किया है। महर्षि मनु ने मनुष्य के गुण-कर्म-स्वभाव पर आधारित व्यवस्था की रचना कर वेदानुकूल पालन किया।

वर्तमान समय में राजनीतिक विवशता के कारण, जान बूझकर विवाद किया गया है। इस ग्रंथ का प्रक्षेपरहित संस्करण आचार्य (डॉ.) सुरेन्द्र कुमार द्वारा टीका सहित है। आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित है। स्वाध्यायशील व्यक्तियों के लिखे परम-उपयोगी ग्रन्थ। श्री एस.सी. सक्सेना ने इस पुस्तक को ₹ 50/- मूल्य पर बाँटने का नेक निश्चय किया है-वैसे पुस्तक का मूल्य ₹ 400/- है। जो सदस्य लेना चाहें कृपा कर 15 दिन के अन्दर ₹ 50/- समाज के दफ्तर में जमा करें।

वार्षिक साधारण अधिवेशन (Annual General Body Meeting) :

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 का अगला साधारण वार्षिक अधिवेशन **दिनांक : रविवार, 14 जुलाई 2019** को **प्रात: 10:15** बजे यज्ञशाला में होना निश्चित हुआ है।

पार्कों में पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञ (हवन)

प्रतिवर्ष की भांति विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून 2019) के अवसर पर आर्य समाज के द्वारा रेज़िडेण्ट्स वेलफेयर एसोसिएशन ऑफ एस-ब्लॉक, आर-ब्लॉक, ई-ब्लॉक, एन-ब्लॉक, बी-ब्लॉक और ग्रेटर कैलाश इन्क्लेव-1 के सहयोग से पार्कों में यज्ञ का आयोजन किया गया 1 जून 2018 से 8 जून 2019 के मध्य प्रातः पर्यावरण शुद्धि हेतु यज्ञ (हवन) किए गये। बड़ी संख्या में लोग इसमें सहर्ष सम्मलित हुए। हमारे धर्माचार्य आचार्य वीरेन्द्र विक्रम जी ने सभी को यज्ञ (हवन) के लाभ तथा उपयोगिता के बारे में विस्तार से समझाया। यज्ञ से प्रदूषित वायु और दुर्गन्ध दूर होती है तथा स्वच्छ वायु और सुगन्ध सभी को मिलती है।

'B'-ब्लॉक

'R'-ब्लॉक

'N'-ब्लॉक

'S'-ब्लॉक

'GK Enclave-I'-ब्लॉक

'E'-ब्लॉक